माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

डा0 नीता गुप्ता* एवं बिन्दु सिंह**

* एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग) आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

**शोधार्थिनी (शिक्षा शास्त्र) आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

सारांश

भारतीय शिक्षा व्यवस्था अति प्राचीन है। भारतीय शिक्षा ने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक विश्व में अपने प्रदर्शन से अपनी अलग पहचान बनाई है। भारतीय इतिहास में झाँक कर देखा जाए तो मानव विकास का मुख्य साधन शिक्षा ही रही है। यदि ठीक से देखा जाए तो भारतीय संस्कृति शिक्षा पर ही आधारित है, जिसके अनेक प्रमाण भी उपलब्ध होते हैं, मानवता का तात्पर्य केवल व्यक्ति ही नही अपितु समष्टि तक का संरक्षण एवं संवर्द्धन है। शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढ़ंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, राज्य समुदाय, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक ''समाज के साथ समायोजन'' की क्षमता का विकास होता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो। बालक की शैक्षिक उपलब्धि में विद्यालय वातावरण का बहुत बड़ा योगदान होता है। जिस प्रकार का विद्यालय का वातावरण होता है। उसी प्रकार उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी हो जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि एक अच्छी शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक अच्छा शिक्षक और अच्छा विद्यालयी वातावरण जरूरी है।

संकेत शब्द :– *माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी एवं शैक्षिक उपलब्धि ।*

प्रस्तावना :–

एक शिक्षक विद्यार्थी की आवश्यकता, क्षमता रूचि, योग्यता, विशेषताः आदि को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करता है। उन विद्यार्थियों में कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं जिनकी आवश्यकता, क्षमता, योग्यता एवं रूचि सामान्य विद्यार्थियों से भिन्न होती है। इनको शिक्षा की सामान्य प्रक्रिया में शामिल नहीं किया जा सकता है, ऐसे विद्यार्थी कक्षा में समयोजन नहीं कर पाते हैं जिस कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। एक अच्छा शिक्षक अपने कक्षा के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखकर शिक्षण करता है। जिसका प्रभाव विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि सहित उसके सर्वांगींण विकास पर पड़ता है। एक अच्छा शिक्षक मानसिक और शारीरिक रूप से सशक्त होना जरूरी है। जिससे वह अपने विद्यार्थियों के ऊपर प्रभाव छोड़ सके। इसके लिए एक शिक्षक को प्रशिक्षित होना भी जरूरी है।

आवश्यकता एवं महत्व :–

विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों में कुछ विषय सामान्य बुद्धिलब्धि से ऊपर के स्तर के होते हैं। इन विषयों को समझने के लिए विद्यार्थियों को अतिरिक्त शैक्षिक प्रयास कराना परिवार व विद्यालय का कार्य है। परन्तु इन दोनों के ध्यान न देने के कारण इनमें शैक्षिक पिछड़ापन आ जाता है। विद्यार्थियों के पिछड़ेपन के कई और भी कई कारण है। जिनमें मुख्यतः उनका दूषित वातावरण है जो उनकी शिक्षा को प्रभावित करता हें उनके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव उनके समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि, सीखने मे

सृजनात्मकता, रूचि, स्मृति और अभिव्यक्ति आदि पर सीधा पड़ता है। जो इनके शैक्षिक रूप से पिछड़ेपन का मुख्य कारण है। सामान्य अध्यापक बच्चों को समझने व अध्यापित करने में पूर्णतः सक्षम नहीं है। जिस कारण से बच्चों की शैक्षिक प्रगति प्रभावित होती है। साथ ही साथ इनकी समायोजन क्षमता, सृजनात्मकता और बुद्धिलब्धि भी प्रभावित होती है। मानसिक दिव्यांग विद्यार्थियों को अगर विशेष, प्रशिक्षण, विशेष शिक्षण एवं विशेष सहायता प्रदान की जाय तो इनकी शैक्षिक उपलब्धि, रूचि, सामंजस्यता और सृजनात्मकता को प्रभावित होने से रोका जा सकता है। किसी भी शोध में इन सब चरों को लेना असम्भव है। लेकिन सुविधा की दृष्टि से शैक्षिक उपलब्धि को ही लिया गया है। विद्यालय के दैनिक कार्यों में रूचि पूर्वक भाग न लेने के कारण विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ निराशाजनक रहती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में इनकी शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :–

निम्नलिखित विद्यार्थियों वाजपेयी अनिता (2007), यादव कमलेश (2009), किशोर राम (2010), प्रकाश वेद (2010), शालिनी (2011), राम मोहन (2014), मुकुल मधुकर (2016) एवं सिंह टी0, वी0 ऊषा (2018) ने बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर शोध कार्य पर प्रकाश डाला है।

समस्या कथन :–

''माध्यमिक स्तर पंर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

परिभाषीकरण :–

शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है, विद्यालय में अध्यापित विषयों में संतोषजनक ज्ञान प्राप्त करना। किसी भी विद्यार्थी के विद्यालयी विषयों में प्राप्त ज्ञान का पता एक लिखित प्रमाण पत्र के रूप में होता है, जो छात्र विषयक कार्यों के बारे में सूचित करता है, यह प्राप्त ज्ञान एवं विकसित कौशल दैनिक, मासिक एवं वार्षिक परीक्षाओं में प्राप्त अंकों से ज्ञात होता है।

न्यादर्श :–

वर्तमान शोध हेतु माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले लगभग 200 विद्यार्थियों को शामिल कर उनको लिंग एवं क्षेत्र एवं धर्म में वर्गीकृत किया गया है।

शोध विधि :–

वर्तमान शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण :–

1. शैक्षिक उपलब्धि– स्वनिर्मित

शोध के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दू एवं मुस्लिम विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध की मुख्य परिकल्पनाएं :–

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दू एवं मुस्लिम विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य, मध्यमान मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–1

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	क्रान्तिक संख्या	सार्थकता का स्तर
छात्र	100	47.12	4.28	2.10	0.01*
छात्रायें	100	48.12	3.92		

तालिका संख्या 1 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाया गया है। जिसमें छात्रों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 47.12 (4.28) जबकि छात्राओं का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 48.12 (3.92) प्राप्त हुआ है। इन दोनों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 2.10 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक है जो इस बात का प्रमाण है कि दोनों समूहों छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता है।

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य, मध्यमान मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–2

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	क्रान्तिक संख्या	सार्थकता का स्तर
ग्रामीण विद्यार्थी	100	35.96	4.36	3.84	0.01*
शहरी विद्यार्थी	100	36.19	3.89		

तालिका संख्या 2 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थी एवं शहरी विद्यार्थियों की और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाया गया है। जिसमें ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 35.96 (4.36) जबकि शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 36.19 (4.40) प्राप्त हुआ है। इन दोनों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 3.84 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक है जो इस बात का प्रमाण है कि दोनों समूहों (ग्रामीण, शहरी) के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता है।

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दु विद्यार्थियों एवं मुस्लिम विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य, मध्यमान मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या–3

कुल विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक संख्या	सार्थकता का स्तर
हिन्दु विद्यार्थी	100	45.94	3.69	1.24	0.01*
मुस्लिम विद्यार्थी	100	46.76	2.92		

तालिका संख्या 3 में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दू विद्यार्थी एवं मुस्लिम विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध को दर्शाया गया है। जिसमें हिन्दु विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन

क्रमशः 45.94 (3.69) जबकि मुस्लिम विद्यार्थियों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 46.76 (2.92) प्राप्त हुआ है। इन दोनों के मध्य क्रान्तिक अनुपात 1.24 प्राप्त हुआ है। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात सार्थकता स्तर से अधिक है जो इस बात का प्रमाण है कि दोनों समूहों के (हिन्दु, मुस्लिम) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया जाता है।

शोध के निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत हिन्दू एवं मुस्लिम विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

संदर्भ सूची :–

अरोड़ा आर0 (2007). *शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी.* मेरठ : लाल बुक डिपो.

चौहान, आर0 (2005). *समेकित शिक्षा में विभिन्न बालकों का समावेश.* जयपुर : ज्ञानपीठ प्रकाशन.

शर्मा आर० (2006). *चाइल्ड साइकोलॉजी.* दिल्ली : एटलांटिक प्रकाशन एवं वितरक.

जोसेफ आर०ए० (2007): *विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास.* बनारस : समाकलन प्रकाशन करौंदी.

मंगल एस०के० (2003) : *शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी* आगरा आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर.

कपिल एच.के. (1998) : *अनुसंधान विधियाँ.* आगरा : भार्गव प्रिन्टर्स.

युग किबंल (2004): *शिक्षा मनोविज्ञान की आधार शिला.* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.

****

How to cite this Article :

गुप्ता, एन0 एवं सिंह, बी0 (2019). माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. *Shiksha Shodh Manthan, 5* (2), 93–96.